अल्लाह के महीने मुहर्रम के फ़ज़ाइल और उसके अहकाम

[हिन्दी – Hindi – هندي]

वैज्ञानिक समिति - साइट अल-मुस्लिम

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1435

IslamHouse.com

فضائل شهر المحرم وأحكامه

« باللغة الهندية »

اللجنة العلمية بموقع المسلم

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1435

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

अल्लाह के महीने मुहर्रम की फज़ीलतें और उसके अहकाम

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान सर्वसंसार के पालनहार अल्लाह के लिए योग्य है, तथा दया और शांति अवतरित हो सबसे प्रतिष्ठित ईश्दूत व सन्देष्टा, हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके परिवार, उनके साथियों तथा क़ियामत तक भलाई के साथ उनकी पैरवी करने वालों पर। इसके बाद :

अल्लाह तआला की अपने बन्दों पर असंख्य नेमतों में से एक यह है कि वह उन्हें नेकियों के मौसम प्रदान करता रहता है ताकि उन्हें भरपूर बदला दे और अपनी अनुकम्पा से उन्हें अधिक प्रदान करे। अभी हज्ज का शुभ मौसम समाप्त ही हुआ था कि उसके बाद एक उदार महीना आ गया और वह अल्लाह का महीना मुहर्रम है। यहाँ पर हम उसकी फज़ीलतों और उसके प्रावधान की ओर संकेत करेंगे।

सर्व प्रथम : अल्लाह के महीने मुहर्रम की हुर्मत (पवित्रता)

अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْراً فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۞ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ ۞ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴾ [التوبة : ٣٦]

''अल्लाह के निकट महीनों की संख्या अल्लाह की किताब में बारह है, उसी दिन से जब से उस ने आकाश और धरती को पैदा किया है। उन में से चार हुर्मत व अदब (सम्मान) वाले हैं। यही शुद्ध धर्म है। अतः तुम इन (महीनों) में अपनी जानों पर अत्याचार न करो, और तुम सभी मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) से लड़ाई (जिहाद) करो, जैसेकि वे तुम सभी से लड़ते हैं, और जान रखो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों के साथ है।'' (सूरतुत तौबा 9 : 36)

अबू बकरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हज्ज में भाषण दिया तो फरमाया :

''सुनो, ज़माना घूम फिरकर उसी हालत पर आ गया है जिस पर उस दिन था जिस दिन अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया। साल बारह महीनों का है। जिनमें से चार हुर्मत वाले महीने हैं। तीन महीने लगातार है : ज़ुल–कादा, ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम और मुज़र कबीले की ओर संबंधित रजब कामहीना जो जुमादा और शाबान के बीच में पड़ता है।'' (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

अल्लामा कुर्तुबी ने फरमाया : ''अल्लाह तआला ने विशेष रूप से हराम महीनों का, उनकी प्रतिष्ठा व सम्मान के तौर पर, उल्लेख किया है और उनमें अत्याचार व अन्याय करने से मना किया है, अगरचे वह हर समय में निषिद्ध है। जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है : ''तो हज्ज में कामुकता की बातें, फिस्क़ व फुजूर (अवहेलना) और लड़ाई–झगड़ा नहीं है।'' (सूरतुल बक़रा : 197)

और अक्सर व्याख्याकारों का यही विचार है : अर्थात् : चारों हुर्मत वाले महीनों अपने आप पर अत्याचार न करो। तथा हम्माद बिन सलमह ने अली बिन ज़ैद से उन्हों ने यूसुफ बिन मेहरान से उन्हों ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है

कि उन्हों ने फरमाया : ''तुम उनमें अपने आप पर अत्याचार न करो'' बारहों महीनों में।'' अंत हुआ।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह ने फरमाया : विद्वानों ने हुर्मत वाले महीनों में लड़ाई की शुरूआत करने के हराम होने के बारे में मतभेद किया है कि क्या वह मनसूख है अर्थात उसका हुक्म रद्द कर दिया गया है, या कि वह मोहकम है अर्थात उस का हुक्म बाक़ी है? इस बारे में दो कथन हैं:

पहला कथन : और वही सबसे प्रसिद्ध है कि : वह मनसूख है ; क्योंकि अल्लाह तआला ने यहाँ फरमाया है : ''इनमें अपनी जानों पर अत्याचार न करो।'' फिर मुशरिकों (बहुदेववादियों) से लड़ाई करने का आदेश दिया है। प्रत्यक्ष संदर्भ इस बात को इंगित करता है कि इसका सामान्य आदेश दिया गया है। यदि वह हुर्मत वाले महीनों में हराम होता तो उसे हुर्मत वाले महीनों के गुज़रने के साथ मुक़ैयद कर दिया जाता। और इसलिए भी कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तायफ वालों का हुर्मत वाले महीने ज़ुल–क़ादा में मुहासरा (घेराव) किया, जैसाकि सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम में साबित है।

दूसरा कथन : हुर्मत वाले महीने में लड़ाई की शुरूआत करना हराम है, और यह कि हुर्मत वाले महीनों के निषेद्ध (तहरीम) को मनसूख नहीं किया गया है। क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلا الشَّهْرَ الْحَرَامَ﴾ [المائدة : ٢]

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह के धर्म के अनुष्ठानों (शआइर) की बेहुर्मती न करो, और न हराम महीनों की।'' (सूरतुल मायदा : 2).

इस बात की भी संभावना है कि मोमिनों को हराम महीने में मुशरिकों से लड़ाई करने की अनुमति दी गई है यदि उसकी शुरूआत उन (मुश्रिकों) की ओर से की गई है।'' अंत हुआ।

दूसरा : अल्लाह के महीने मुहर्रम की फज़ीलत

इब्ने रजब फरमाते हैं : ''विद्वानों ने इस बारे में मतभेद किया है कि हुर्मत वाले महीनों में कौन सा महीना सर्वश्रेष्ठ है? तो हसन वगैरह ने कहा है कि : उनमें सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का महीना मुहर्रम है। बाद के लोगों के एक समूह ने इसे राजेह क़रार दिया है।

तथा वहब बिन जरीर ने कुर्रा बिन खालिद के माध्यम से हसन से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : अल्लाह तआला ने साल का आरंभ हुर्मत वाले महीने से किया है और उसका अंत भी हुर्मत वाले महीने पर किया है। अतः रमज़ान के बाद साल का कोई महीना अल्लाह के निकट मुहर्रम से अधिक महान नहीं है। उसकी सख्त हुर्मत की वजह से उसका नाम अल्लाह का बहरा महीना रखा जाता था। नसाई ने अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से उल्लेख किया है कि उन्हों ने कहा : ''मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा : कौन सी रात सबसे अच्छी है और कौन सा महीना सबसे श्रेष्ठ है? तो आप ने फरमाया : ''सबसे अच्छी रात उसका मध्य भाग है, और सबसे श्रेष्ठ महीना अल्लाह का महीना है जिसे तुम मुहर्रम के नाम से पुकारते हो।''

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस हदीस में मुहर्रम के महीने को सर्वश्रेष्ठ महीना कहने का यह अर्थ है कि वह रमज़ान के बाद सबसे श्रेष्ठ महीना है, जैसाकि हसन की मुर्सल हदीस में है।'' अंत हुआ।

तथा उसकी फज़ीलत का एक प्रमाण मुस्लिम की वह हदीस भी है जिसे उन्हों ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''रमज़ान के बाद सबसे श्रेष्ठ रोज़े अल्लाह के महीने मुहर्रम के हैं, और फर्ज़ नमाज़ के बाद सबसे श्रेष्ठ नमाज़ रात की नमाज़ है।''

इब्नुल क़ासिम कहते हैं : ''अर्थात रमज़ान के महीने के बाद सबसे बेहतर नफली रोज़े का संपूर्ण महीना अल्लाह का महीना मुहर्रम है ; क्योंकि कुछ नफली रोज़े मुहर्रम के दिनों से बेहतर हो सकते हैं जैसे : अरफा का रोज़ा और ज़ुलहिज्जा के प्रारंभिक दहे के रोज़े। अतः सामान्य नफली रोज़ों में सबसे श्रेष्ठ मुहर्रम है, जिस तरह कि फर्ज़ नमाज़ के बाद सबसे श्रेष्ठ नमाज़ रात का क़ियाम (तहज्जुद) है।'' अंत हुआ।

इमाम नववी ने कहा : ''यदि कहा जाय कि : हदीस में है कि रमज़ान के बाद सबसे श्रेष्ठ रोज़ा मुहर्रम का रोज़ा है, तो फिर अक्सर रोज़ा मुहर्रम के बजाय शाबान में कैसे है?

तो इसका जवाब यह है कि : शायद आप को मुहर्रम की फज़ीलत का ज्ञान अपने जीवन के अंत में उसका रोज़ा रखने

पर सक्षम होने से पूर्व हुआ, या हो सकता है आपको उसमें कोई उज़्र पेश आ जाता रहा हो जो उसमें अधिक से अधिक रोज़ा रखने में रूकावट रहा हो, जैसे यात्रा, बीमारी वगैरह।'' नववी की बात समाप्त हुई।

अल्लामा इब्ने रजब कहते हैं : ''नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहर्रम का नाम अल्लाह का महीना रखा है, और उसकी अल्लाह की ओर निस्बत करना उसकी महानता व प्रतिष्ठा को दर्शाता है। क्योंकि अल्लाह तआला अपनी ओर अपनी विशेष सृष्टियों को ही मनसूब करता है, जिस तरह कि मुहम्मद, इब्राहीम, इसहाक़, याकूब और उनके अलावा पैगंबरो को अपनी उपासना की ओर मनसूब किया है। तथा जिस तरह अपनी ओर अपने घर और अपनी ऊँटनी को मनसूब किया है। और जब यह महीना विशिष्ट रूप से अल्लाह की ओर मनसूब था, और रोज़ा सभी कामों के बीच विशिष्ट रूप से अल्लाह की ओर मनसूब है, क्योंकि वह अल्लाह सुब्हानहु व तआला के लिए ही है। इसलिए मुनासिब था कि अल्लाह की ओर मनसूब यह महीना ऐसे काम के साथ विशिष्ट हो जो अल्लाह की ओर मनसूब और उसी के लिए विशिष्ट हो और वह रोज़ा है। तथा

इस महीना के अल्लाह की ओर मनसूब होने के अर्थ में यह भी कहा गया है कि इसमें इस बात की ओर संकेत है कि इसे हराम ठहराना अल्लाह की ओर है, किसी अन्य को इसे बदलने का अधिकार नहीं है, जैसाकि जाहिलियत काल के लोग उसे हलाल ठहरा लेते थे और उसकी जगह पर सफर के महीने को हराम ठहराते थे। तो इससे यह इंगित किया गया है कि यह अल्लाह का महीना है जिसे उसने हराम ठहराया है। इसलिए उसकी सृष्टि में से किसी के लिए उसे बदलने और परिवर्तित करने का अधिकार नहीं है।

इस महीने के अंदर एक दिन ऐसा है जिसके अंदर एक महान घटना घटी और एक स्पष्ट विजय प्रतीत हुआ। इस दिन अल्लाह ने सत्य को असत्य पर प्रभुत्ता प्रदान किया (झूठ पर सच को जीत प्रदान किया); चुनाँचे इसमें मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को नजात दिया और फिरऔन और उसकी क़ौम को डिबो दिया। अतः वह ऐसा दिन है जिसकी एक महान प्रतिष्ठा और पुरातन स्थान है।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्हों ने कहा : ''अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आए,

तो यहूद को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से कहा : ''यह कैसा दिन है जिस का तुम रोज़ा रखते हो?'' उन्हों ने कहा : यह एक महान दिन है, जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को नजात प्रदान की, तथा फिर्औन और उसकी क़ौम को डुबा दिया, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हूए इस दिन रोज़ा रखा। इसलिए हम भी रोज़ा रखते है। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''हम मूसा अलैहिस्सलाम (की पैरवी) के तुम से अधिक योग्य और हक़दार है।'' फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दिन रोज़ा रखा और लोगों को भी इसका आदेश दिया।''

तथा अहमद ने अबू हुरैरा से इसी समान रिवायत किया है जिसमें यहद वृद्धि है कि : ''और इसी दिन (नूह अलैहिस्सलाम की) कश्ती जूदी पहाड़ पर रूकी। तो नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का शुक्र आद करते हुए उसका रोज़ा रखा।''

तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : ''मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

को आशूरा के दिन और रमज़ान के महीने के अतिरिक्त किसी अन्य दिन को दूसरे दिनों से अफज़ल जान कर उनका रोज़ा रखते हुए नहीं देखा।'' (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम).

इब्ने हजर कहते हैं : ''यह रिवायत इस बात की अपेक्षा करती है कि रोज़ेदार के लिए रमज़ान के बाद सबसे श्रेष्ठ आशूरा (दसवीं मुहर्रम) का दिन है। लेकिन इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने इसे अपने ज्ञान के आधार पर बयान किया है। अतः यह उनके अलावा के ज्ञान का खण्डन नहीं करता है। जबकि मुस्लिम ने अबू क़तादा की हदीस से मरफूअन रिवायत किया है कि आशूर का रोज़ा एक साल के गुनाहों का कफ्फारा है और अरफा के दिन का रोज़ा दो साल के गुनाहों का कफ्फारा है। इसका प्रत्यक्ष अर्थ यह है कि अरफा के दिन का रोज़ा आशूरा के रोज़े से बेहतर है। इसकी हिकमत यह बतलाई गई है कि आशूरा का दिन मूसा अलैहिस्सलाम की ओर मनसूब है, और अरफा का दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर मसूब है, इसलिए वह सबसे श्रेष्ठ है।'' इब्ने हजर की बात समाप्त हुई।

तथा रुबैइअ् बिन्त मुअव्विज़ से रिवायत है वह कहती हैं कि : ''आशूरा की सुब्ह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना के इर्द गिर्द अन्सार की बस्तियों **में यह सन्देश भेजा :** ''तुम में से जिस ने रोज़ा की हालत में सुब्ह की है वह अपना रोज़ा पूरा करे, और तुम में से जिस ने रोज़ा न रखते हुए सुब्ह की है वह अपना अवशेष दिन रोज़ा की हालत में बिताए।'' चुनाँचे इस के बाद हम रोज़ा रखते थे और अपने छोटे बच्चों को भी रोज़ा रखवाते थे, और उन्हें मस्जिद लेकर जाते थे, और उनके लिए रंग–बिरंगे कपड़ों का खिलौना तैयार करते थे, जब उन में से कोई बच्चा खाने के लिए रोता तो हम उसे वह खिलौना दे देते थे यहाँ तक कि रोज़ा खोलने का समय हो जाता था।'' (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम).

आशूरा के दिन की फज़ीलत

आशूरा के दिन की एक महान प्रतिष्ठा और प्राचीन हुर्मत है। चुनाँचे इसकी फज़ीलत की वजह से मूसा अलैहिस्सलाम इस दिन रोज़ा रखते थे, बल्कि अह्ले किताब (यहूद) भी इसका

रोज़ा रखते थे, बल्कि यहाँ तक कि जाहिलियत के युग में कुरैश भी इसका रोज़ा रखते थे। तथा आशूरा और उसके रोज़ा की फज़ीलत के बारे में कई हदीसें वर्णित हैं, उन्हीं में से कुछ निम्नलिखित हैं :

सहीह मुस्लिम में अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आशूरा के रोज़े के बारे में पूछा तो आप ने फरमाया :

"إني أحتسب على الله أن يكفر السنة التي قبله"

''मुझे अल्लाह तआला से आशा है कि इसके रोज़े को पिछले साल के गुनाहों का कफ्फारा बना देगा।'' (मुस्लिम, हदीस न॰ 1976)

यह अल्लाह की हमारे ऊपर महान कृपा है कि उसने एक दिन के रोज़े को पूरे एक साल के गुनाहों का कफ्फारा बना दिया।

तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : ''मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आशूरा के दिन और रमज़ान के महीने के अतिरिक्त किसी अन्य दिन को दूसरे दिनों से अफज़ल जान कर उनका रोज़ा रखते हुए नहीं देखा।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 1867).

इसके रोज़े की हिक्मत :

इसके रोज़े की हिक्मत यह है कि आशूरा के दिन ही अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को फिरऔन और उसके सैनिकों से बचाया था। तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए उस दिन रोज़ा रखा और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इसका रोज़ा रखा और इसका रोज़ा रखने का आदेश दिया।

सहीह बुखारी व मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस से आया है कि उन्हो ने कहा : ''अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आए, तो यहूद को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से कहा : ''यह कैसा दिन है जिस का तुम रोज़ा रखते हो?'' उन्हों ने कहा : यह एक महान दिन है, जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को नजात प्रदान की, तथा फिर्औन और उसकी क़ौम को डुबा दिया, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हूए इस दिन रोज़ा रखा। इसलिए हम भी रोज़ा रखते है। इस पर

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''हम मूसा अलैहिस्सलाम (की पैरवी) के तुम से अधिक योग्य और हक़दार है।'' फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दिन रोज़ा रखा और लोगों को भी इसका आदेश दिया।''

जहाँ तक नौ मुहर्रम का रोज़ा रखने की बात है, तो नववी रहिमहुललाह ने इस बारे में विद्वानो से कई कारण उल्लेख किए है :

पहला : इससे मुराद यहूदियों का विरोध (मुख़ालफत) है क्योंकि वे केवल दस मुहर्रम का रोज़ा रखते हैं।

दूसरा : इसका उद्देश्य आशूरा के रोज़े को एक अन्य रोज़े के साथ मिलाना है, जिस तरह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अकेले जुमा के दिन का रोज़ा रखने से मना किया है।

तीसरा : दस मुहर्रम के रोज़े के बारे में सावधानी से काम लेना है इस डर से कि चाँद में कमी रही हो और गलती हो गई हो, तो गिनती मैं नौ तारीख वास्तव में दस तारीख हो।

इन कारणों में सबसे मज़बूत यहूदियों का विरोध है, जैसाकि शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह ने इसकी ओर संकेत किया है।

आशूरा के रोज़े की श्रेणियाँ :

पहली श्रेणी : नौ और दस मुहर्रम का रोज़ा रखना, और यह सबसे श्रेष्ठ श्रेणी है। जैसाकि सहीह मुस्लिम में अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आशूरा के रोज़े के बारे में फरमाया : ''मुझे अल्लाह तआला से आशा है कि इसके रोज़े को इससे पहले के साल के गुनाहों का कफ्फारा बना देगा।''

तथा सहीह मुस्लिम में ही इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''यदि मैं अगले साल तक जीवित रहा तो नौ और दस का रोज़ा रखूँगा।''

दूसरी श्रेणी : दस और ग्यारह मुहर्रम का रोज़ा रखना, क्योंकि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''यहूद की मुखालिफत करो। उससे पहले एक दिन या उसके बाद एक दिन रोज़ा रखो।'' इसे अहमद और इब्ने खुज़ैमा ने उल्लेख किया है।

तीसरी श्रेणी : नौ, दस और ग्यारह मुहर्रम का रोज़ा रखना, क्योंकि इब्ने अब्बास की मरफूअन हदीस है : ''उससे एक दिन पहले रोज़ा रखो और उसके एक दिन बाद रोज़ा रखो।''

चौथी श्रेणी : केवल दस मुहर्रम का रोज़ा रखना, क्योंकि सहीह मुस्लिम में अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आशूरा के रोज़े के बारे में फरमाया :

''मुझे अल्लाह तआला से आशा है कि इसके रोज़े को इससे पहले के साल के गुनाहों का कफ्फारा बना देगा।''

स्रोत : साइट अल–मुस्लिम